अखिल भारत का केन्द्र

मैं मानता हूँ कि अब नये सिरे से प्रान्त-रचना हो रही है तो उसमें से भी कुछ अच्छी चीज निकल सकती है। अब तालीमी संघ सर्व-सेवा-संघ में लीन हो गया है तो हम लोगों की सम्मति से उसे नयी तालीम या अच्छी तालीम भी कह सकते हैं, उस क्षेत्र में फैला सकते हैं। बाकी अम्बर-चरखा, गोसेवा वगैरह कई काम वहाँ चलते ही हैं। गोसेवा के बहुत अच्छे प्रयोग वहाँ हुए हैं। वहाँके काम में और थोड़ी शक्ति आप जोड़ना चाहते हैं तो मैं जोड़ सकता हूँ। सेवाग्राम के साथ यह चीज जुड़ जायगी तो वह एक प्राणवान वस्तु बनेगी। फिर मैं भी साल में महीना या पन्द्रह दिन उस जिले में दे सकता हूँ। वहाँसे छह सौ मील के अन्दर-अन्दर हिंदुस्तान के बहुत सारे प्रान्त आ जाते हैं। वर्धावाले यह जिम्मा क्यों नहीं उठाते हैं? ऐसा सवाल मैंने पूछा था। वहाँपर एक अस्पताल चलता है। हम ऐसे बुतशिकन्द नहीं हैं कि उसे तोड़ें। हम मूर्ति की स्थापना नहीं करते हैं, लेकिन मूर्ति-भंजक भी नहीं हैं। इसलिए उस अस्पताल में एकदम से प्राकृतिक उपचार चलाया जाय, यह तो हम नहीं कहेंगे, बल्कि चाहेंगे कि आज जो चल रहा है, वह चले और उसके साथ-साथ हम नयी चीजें भी दाखिल करते चले जायँ। वहाँपर एक वनस्पति का अच्छा बगीचा भी बनाया जाय तो फिर धीरे-धीरे लोग कहेंगे कि हमें वनस्पति का रस ही चाहिए, दूसरी दवाएँ नहीं।

मैं चाहता हूँ कि हमारा वर्धा अखिल भारत का केन्द्र भी हो। लेकिन उसमें मंडूकप्लुति न हो। याने आसपास के क्षेत्र का ताल्लुक छोड़कर दिल्लीवाले कूदें और सेवाग्राम आयें, यह न हो। सेवाग्राम में ट्रेनिंग की व्यवस्था भी हो सकती है। लेकिन वहाँका सारा काम आसपास के लोगों की सम्मति से, उनके आशीर्वाद से हो। वहाँपर ऐसा ऐश्वर्य खड़ा न हो कि जिसपर लोगों की नजर लगे।

वर्धा आध्यात्मिक स्थान हो

अभी नयी प्रान्त-रचना होगी तो मैं चाहता हूँ कि सेवाग्राम में जो बुनियादी स्कूल चलें, वे आदर्श मराठी स्कूल चलें। जो महाराष्ट्र के सन्तों के वचनों के आधार पर खड़े हों। आस-पास के लोगों पर प्रभाव न पड़े और उनके हृदय को खींच न सके, ऐसा न हो। अभी तक वहाँ जो प्रयोग चला, वह अच्छा ही था। लेकिन उसमें इस दृष्टि से काम न हो सका। इसका कोई इलाज नहीं था। जैसे एक जमाने में साबरमती की तरफ मेरी दृष्टि थी, वैसे अब वर्धा की तरफ यह दृष्टि रहेगी कि वह महाराष्ट्र के और भारत के भी मध्य में एक आध्यात्मिक स्थान हो। जैसे पंढरपुर है। अपने पूर्वजों ने कैसी यात्रा चलायी। उनकी शक्ति का अब खयाल आता है। मैंने बोधगयावालों से कहा कि वहाँपर तुम पूर्णिमा की यात्रा शुरू करो। इसमें इमेजिनेशन का सवाल है। युग कौन-सा आ रहा है, यह सोचना चाहिए। इसमें कोई शक नहीं कि अब बुद्ध भगवान का जन्म हो रहा है।

सोशल रिफार्म

मुझे एक जापानी भिक्षु ने सुनाया कि जापान के साहित्य में लिखा है कि बुद्ध भगवान २५०० साल के बाद फिर से भारत में जन्म पायेंगे। इसका मतलब यह है कि उनके तालीम की जरूरत महसूस होगी। भारत उस तालीम का उद्गम-स्थान है। इसलिए हमें समझना चाहिए कि बोधगया एक स्वाभाविक केन्द्र हो सकता है और उसे उस दृष्टि से डेवलप किया जाय और लोगों को प्रेरित किया जाय। वहाँपर यात्राएँ चलें। जिसमें हिन्दू, बौद्ध, जैन सब आयें। इस दृष्टि से जब मैं सेवाग्राम की तरफ देखता हूँ तो ध्यान में आता है कि वहाँपर बहुत सारे हरिजन बौद्ध बन चुके हैं। इस घटना की तरफ हमें ध्यान देना चाहिए। जमनालालजी ने लक्ष्मीनारायण का मन्दिर हरिजनों के लिए खोला, जो हिन्दुस्तान में हरिजनों के लिए खुलनेवाले मंदिरों में पहला, दूसरा ही होगा। उस वक्त हरिजन बड़े उत्साह से उसमें आये। दूसरे लोगों में से कुछ आये तो कुछ नहीं आये। लेकिन आज हालत यह है कि उस मन्दिर पर अगर किसीका बहिष्कार है तो हरिजनों का है। क्योंकि जबसे उन्होंने बौद्ध धर्म को स्वीकार किया है, तबसे उनके लिए वह मन्दिर नापाक स्थान बन गया है। याने जिनके लिए वह मन्दिर खुला, उन्हींका उनपर बहिष्कार है। हमें सोचना चाहिए कि हमने धम्मपद पर लिखा है। हमारे भाई ने और कुन्दर ने भी लिखा है। इसका लाभ लेकर वहाँपर हरिजनों में हम जा सकते हैं। उनमें बौद्धधर्म के लिए जो प्रीति पैदा हुई है, वह हमारे खिलाफ नहीं है, बल्कि उसे हम एक सोशल रिफार्म की दृष्टि से मान सकते हैं। हिन्दू धर्म में ऐसे कई रिफार्म हुए हैं और उन सबका उसने लाभ उठाया है। यद्यपि वहाँके हरिजन बौद्ध बनते हों तो उनकी स्थूल दृष्टि है और कुछ नफरत भी है। लेकिन फिर भी उससे उनमें चैतन्य-संचार हुआ है, उनमें से कुछ लोगों ने शराब छोड़ी है तो रिफार्म के तौर पर भगवान बुद्ध के नाम से उनमें कई अच्छी चीजें दाखिल की जा सकती हैं। यह भी कार्य-क्षेत्र हमारे लिए खुला है, ऐसे सब विचार लेकर हम वहाँ काम करें तो हो सकता है। ◆◆◆

आज शहरवाले देहातवालों से कहते हैं कि भगवान ने आपको अच्छा जिस्म दिया है तो आप दस घंटा मेहनत कीजिये, अपना पसीना बहाइये और भगवान ने हमें दिमाग दिया है, इसलिए हम दिमाग का ही काम करेंगे। इसपर कोई भी बच्चा पूछेगा कि अगर ऐसा ही होता तो भगवान कुछ राहू और कुछ केतु पैदा करता, कुछ सिर और कुछ धड़। लेकिन भगवान को यह मंजूर नहीं है, इसलिए उसने शहरवालों को भी सिर के साथ हाथ, पाँव और पेट दिये हैं। उन्हें भी भूख लगती है और देहातवालों को भी हाथ-पाँव के साथ सिर दिया है, उन्हें भी बुद्धि की भूख लगती है। इसलिए दो टुकड़े जोड़कर रफू करके जोड़ा हुआ वस्त्र बनाने के बजाय एक बुना हुआ अखंड वस्त्र बनाया जाय। शहरवालों की जिंदगी भी पूर्ण हो और देहातियों की भी। इस तरह हम विकेन्द्रित ग्राम-योजना चाहते हैं। ◆◆◆

अनुक्रम

१. शांति-सेना-मंडल और हमारा कर्तव्य
पठानकोट २४ सितम्बर '५९ पृष्ठ ७२७
२. सेवाग्राम की योजना समग्र दृष्टि सामने रखकर की जाय
पठानकोट २२ सितम्बर '५९ „ ७२८

श्रीकृष्णदत्त भट्ट, अ० भा० सर्व-सेवा-संघ द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में सम्पादित, मुद्रित और प्रकाशित।
पता : गोलघर, वाराणसी (उ० प्र०) फोन : १३९१
तार : 'सर्व-सेवा' वाराणसी
www.vinoba.in